Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: Crossref, ROAD & Google Scholar

81

आधुनिक हिंदी साहित्य और नारी (राजनीतिक परिपेक्ष के अंतर्गत)

डी . शंकर

रिसर्च स्कोलर, हिन्दी, सुरेन्द्रनगर युनिवर्सिटी, वढवान शहर, गुजरात

प्रस्तुत लेख आधुनिक साहित्य और नारी के अंतर्गत भारतीय राजनीति में महिलाओं की भूमिका का अध्ययन राजनीतिक दृष्टिकोण से किया गया है। इस विषय के अंतर्गत राजनीति में आधुनिक महिलाओं की भागीदारी वर्तमान स्थिति एवं समस्याएं तथा उनके राजनीतिक भविष्य की चर्चा एवं अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

साहित्य समाज का दर्पण है। माना जाता है समाज के विभिन्न ज्वलंत मुद्दों को साहित्यकार समीक्षा करता है और उसके परिहार स्वरूप अपने विचारों को रचनाओं के रूप में प्रस्तुत करता है। साहित्य समाज का प्रतिबिंब है यदि समाज शरीर है तो साहित्य उसका मस्तिष्क माना जाता है । साहित्य में जो शक्ति निहित है वह तोप और तलवार में भी नहीं पाई जाती है। मुंशी प्रेमचंद को कलम का सिपाही इसीलिए कहा गया क्योंकि उन्होंने अपने साहित्य से नई चेतना को जागृत किया था।

हिंदी साहित्य में नारी की अवधारणा के बिना यह विषय अधूरा प्रतीत होता है। क्योंकि देश काल के किसी भी परिस्थितियोंस्थितियो मे नारी ने अपना योगदान प्रस्तुत किया है।

किसी भी देश की उन्नति या साहित्य नारी की सहभागिता के बिना अधूरा है। आधुनिक नारी ने शिक्षा जगत से लेकर राजनीतिक पटल तक अपने आप को साबित किया है। फिर वह क्षेत्र खेल, अध्ययन सी और अंतरिक्ष क्षेत्र ही क्यों ना हो। हिंदी साहित्य में नारी का योगदान व नारी विमर्श तथा नई चेतना

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: Crossref, ROAD & Google Scholar

आदि बिंदुओं की चर्चा होती रहती है । आधुनिकता के इस युग में नरी ने राजनीति में भी अपनी छाप छोड़ी है । शोषण उत्पीड़न अवहेलना के गर्त से अपने आप को संशक्त कर शिक्षा के मार्ग से प्रशस्ति हासिल करली है।

स्त्री जगत के उत्थान हेतु, आज स्त्री राजनीति के क्षेत्र में भी अपना लोहा मनवा चुकी है । कोमल स्वभाव की ना, री जब अपने अस्तित्व की रक्षा हेतु कठोर रूप धारण कर लेती है, तो उस समय पुरुष भी अपने आप को निस्सहाय महसूस करता है। बढ़ती हुई महिला भागीदारी के चलते राजनीति में भी महिलाओं का वर्चस्व जरूरी बन गया है । इतिहास के पन्नों को जब टटोलते हैं तो राजनीति हो या राष्ट्र नीति महिलाओं का योगदान स्पष्ट रूप से स्वर्ण अक्षरों में अंकित किया गया है ।

तमिलनाडु की अम्मा उपाधि से सम्मानित श्री स्वर्गीय जयललिता जी, स्वर्गीय इंदिरा गांधी जी, स्वर्गीय सुषमा स्वराज जी आधुनिक नारी के आधार स्तंभ माने जाते है। स्मृति ईरानी द्रौपदी मुर्मू और मायावती, वसुंधरा राजे, शीला दीक्षित, ममता बनर्जी और मीरा कुमारी जैसे गणमान्य महिलाओं ने राजनीतिक क्षेत्र में अपना योगदान दिया है । राजनीति के क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित करने हेतु कुछ सरकारों ने अथक प्रयास किए हैं सबसे पहले 1996 में एचडी देवगौड़ा की सरकार ने महिला आरक्षण विधेयक को संसद में पेश किया इसके बाद लगभग 27 सालों तक महिला आरक्षण विधेयक अधर में लटका रहा । कर्तव्य निष्ठा महिलाओं के प्रति सच्ची श्रद्धा रखने वाले श्री दामोदर नरेंद्र मोदी जब भारत के प्रधानमंत्री बने तो उन्होंने 18 सितंबर 2023 को संसद के विशेष सत्र के पहले दिन ही इस विधेयक को मंजूरी दी और लोकसभा से बुधवार को ऐतिहासिक घटनाक्रम के तहत नारी शक्ति वंदन अधिनियम, दो तिहाई बहुमत से पारित हो गई । इस आरक्षण में महिलाओं के लिए विधानसभाओं में और लोकसभा में एक तिहाई सीटों के रिजर्व करने का प्रावधान है ।भारतीय राजनीति में एक स्वर्ण अध्याय लिखा गया जब राज्यसभा में नारी शक्ति वंदन अधिनियम को सभी राजनीतिक पार्टियों का समर्थन मिला समर्थन में कुल 214 राज्यसभा सांसदों ने अपना समर्थन दिया । विशेष बात यह रही की महिला आरक्षण के विरोध में एक भी वोट नहीं गया सभी राजनीतिक दलों में पूर्ण रूप से नारी शक्ति वंदन अधिनियम को मंजूरी दी। इसका श्रेय तो श्री नरेंद्र मोदी जी को जाता है उन्होंने उन्होंने नारी को उसकी पहचान और अधिकार

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: Crossref, ROAD & Google Scholar

दिलाने में दिन-रात अथक परिश्रम किया और इस सपने को साकार किया । भारत की प्रगतिशील महिला राजनीतिज्ञ में एक प्रमुख स्थान रखने वाली अभिनेता से राजनीतिक बने स्मृति इरानी का जन्म दिल्ली में हुआ ।राजनीति के शुरुआती दिनों में उन्होंने भाजपा के महिला विंग की सेवा की फिर कालांतर में अपनी मेहनत से भाजपा के द्वारा गुजरात राज्य से राज्यसभा के लिए भेजी गई । अपने राजनीतिक जीवन में स्मृति ईरानी ने कई दिग्गज नेताओं के खिलाफ चुनाव लड़ी कपिल सिब्बल और कांग्रेस के अघोषित अध्यक्ष राहुल गांधी भी स्मृति ईरानी के हाथों अमेठी में 55, 000 वोटो से हार गए थे। राहुल गांधी का यह हर और स्मृति ईरानी का राजनीतिक उत्थान कई दिनों तक समाचार पत्रों मे मुख्य पृष्ठ बना हुआ था ।

इसी प्रकार उत्तर प्रदेश पर चार बार मुख्यमंत्री के रूप में कार्य संपन्न करने वाली श्री कुमारी मायावती जी का उल्लेख करना भी आवश्यक है ।श्री मायावती जी भारत की किसी भी राज्य की मुख्यमंत्री बनने वाली पहली भारतीय दलित महिला थी । उनको दलितों के जीवन उथ्थान का प्रतीक माना जाता है । उनको लोग प्यार से बहन जी कह कर बुलाते हैं । राजनीतिक इतिहास का कल दिन, 2 जून 1995 को उस दिन मायावती लखनऊ में ही स्टेट गेस्ट हाउस में बहुजन समाजवादी पार्टी के विधायकों के साथ मीटिंग कर रही थी, उधर समर्थन वापसी की सूचना से आग बबूला हुए मुलायम सिंह यादव ने अपने समर्थकों को गेस्ट हाउस भेज दिया ।बाहुबलियों की यह फौज मायावती को जाति सूचक और लिंग सूचक बद्दी गली दी और मायावती को जान से मारने की धमकी दी गई ।

लोकतंत्र के पावन क्षेत्र में पुरुषों का बाहुल्य, दमन की राजनीतिक खेल खेल रहा था ।एक नरे जो चुनी हुई जनप्रतिनिधि थी उसके प्राणों का ही रक्षा का कोई भरोसा ना था। कहा जाता है कि कांशीराम ने इसे मायावती की सबसे बड़ी अग्नि परीक्षा कहा था। इसके बाद 3 जून 1995 को बीजेपी के समर्थन से देश में पहली दलित महिला मुख्यमंत्री के रूप में शपथ ल।

इसी प्रकार का दुर्व्यवहार भाजपा के सांसद रूपा गांगुली के साथ भी किया गया ।चिंता का विषय यह है कि, यहां इस घटना को पुलिस के समक्ष ही कार्य रूप दिया गया । पुलिस मूकदर्शक बनी रही । 22 मई 2016 को पश्चिम बंगाल के डायमंड हार्बर में 17 से 18 लोगों की भीड़ ने रूपा गांगुली की गाड़ी रोकी और

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: Crossref, ROAD & Google Scholar

उनको जबरन गाड़ी से उतर कर मारपीट करने लगे। इस मारपीट में रूपा गांगुली बुरी तरह घायल हुई और उनको ब्रेन हेमरेज भी हुआ था। अधमरे अवस्था में किसी तरह वह अपनी आत्मरक्षा करते हुए रक्तस्राव और कई चोट लगने के बावजूद अस्पताल पहुंची और वहां उन्होंने कड़ी संघर्ष के बाद डॉक्टर के देखरेख में उसे घटना से उभर कर फिर राजनीति में आज अपना वर्चस्व स्थापित कर रही है। नारी का उत्पीड़न आधुनिक राजनीति में एक काला अध्याय के रूप में दर्ज हो गया था।

महिला समाज के लगभग आधे भाग का प्रतिनिधित्व करती है लेकिन उनकी राजनीतिक सहभागिता अपर्याप्त है महिलाएं समस्त पारिवारिक दायित्व का बोझ उठाकर भी सामाजिक क्रियाकलापों में भागीदारी बन रही है । आज महिला भागीदारी की दृष्टि से कृषि,पशुपालन, हैंडलूम, गृह उद्योग में काफी बढ़ोतरी हुई है । अब महिलाएं इलेक्ट्रॉनिक्स, टेलीकम्युनिकेशन, उपभोक्ता उत्पादन, संगठित क्षेत्र के उद्योग विधि, चिकित्सा, प्रशासनिक व्यवस्थाओं में भाग ले रही है । महिलाओं के लिए कार्य शब्द की परिभाषा बहुत छोटी पड़ जाती है ।एक महिला सवेरे उठने से लेकर रात को सोने तक 24 सो घंटे, सप्ताह के सातों दिन काम के प्रति समर्पित रहती है । छुट्टी या आराम शब्दों का महिला के आधुनिक जीवन में कोई जगह नहीं है । वह यंत्र की भांति निरंतर काम करती रहती है,करती रहती है। और गृहस्थ जीवन को आगे बढ़ाने हेतु निरंतर चरैवेति चरैवेति की राह पर, बिना थके बिना रुके प्रस्थान को आगे बढ़ती रहती है ।

ऐसे महान, मजबूत और महत्व के करुणा स्वरूप का वर्णन करना मेरे लिए बहुत सौभाग्य की बात है । यह मेरा एक छोटा सा प्रयास मात्र ही है । आधुनिक महिला के लिए समर्पित मेरी एक छोटी सी कविता है ।

जीवन संघर्ष आज भी है जारी, हाँ मैं हूं आधुनिक नारी

स्वाभिमान से जीती मै , आज की आत्मनिर्भर नारी

पुरुष प्रधान जगत से , मैं ना हारी

दुष्टो का दमन करने, चढ़ आई मै, सिंह सवारी

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: Crossref, ROAD & Google Scholar

गृहस्थ जीवन हो या कार्य क्षेत्र की गहराई

अथक संघर्ष है, आज भी जारी

कई रूप धारण करती मैं, आज की नारी

अपने आप में, सीमिति अस्मिता हमारी

चुनौतियों के पहाड़ पर आज भी मै हूँ भारी

किसी पहचान की मोहताज नहीं मैं, मै हूँ, आज की आधुनिक नारी।